The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

कोरबा जिले में नशे की आदत का सामजिक चुनौती के रूप में एक समाजशास्त्रिय अध्ययन

डॉ विमला सिंह .
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
कमला नेहरू महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

डॉ सर्वेश कुमार सिंह .
अतिथि प्राध्यापक (राज. विज्ञान)
शा. ई.वि. स्नातको. महा. कोरबा (छ.ग.)
9827967687.ss@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

आंध्र प्रदेश, शराब , नशीला वातावरण , हानिकारक , पारिवारिक, सामाजिक अलगाव

ABSTRACT

मानव जीवन का चरम लक्ष्य अपने जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के साथ साथ अपने व्यक्तित्व का अधिकाधिक विकास करना है। जिसके लिये उसे कुछ ऐसी सुविधाओ अथवा परिस्थिति की आवश्यकता होती है जिनके आभाव में न तो उसके जीवन का अश्तित्व ही संभव है और न ही वह अपने व्यत्तित्व का सर्वांगीण विकास करके पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, पर हमारे समाज में अनेक समस्याएं व्याप्त होती है, जिसके चलते समाज नैतिक पतन को प्राप्त लेता है। समाज में नैतिक पतन के भी अनेक कारण होते है जिसमें से नशा एक प्रमुख कारण है नशे के लिये शराब, सिगरेट, तंबाकू, अफीम, चरस, गांजा (भांग), हेरोइन, कोकेन, आदि का प्रयोग किया जाता है। नशे में मदोन्मत हो जाने के बाद मनुष्य में लज्जा भय, संकोच और मान-मर्यादा जैसी कोई चीज़ नहीं रह एक जाती, वह बिना संकोच के जब जहां जैसा चाहता है करता है, नशा व्यक्ति एक दीमक की भांति खोखला करते जाता है इसलिए यह समाजशास्त्रियों, कवियों, लेखकों, चिकित्सकों आदि का महत्वपूर्ण चिन्तन का विषय बन गया है।

परिचय-

"नशे का इतिहास काफी पुराना है प्राचीन समाज में नशा एक शौक के रूप में राजा महाराजा, साधु-सन्यासी प्रयोग करते थे। प्राचीन समाज में भांग, शराब, तम्बाकू एवं चिलम पीना ही शौक था।" 1. जब धिरे धिरे धीरे-धीरे इसके दुष्परिणाम सामने आने लगे तो इसे नशा, का दर्जा दे दिया गया I उच्च वर्ग के बाद धीरे - धीरे समाज के सभी वर्ग के लोग नशा का प्रयोग करने लगे। इससे हमारा युवा छात्र छात्राएं भी अछूते नहीं रह पाए हैं I डाक्टर डरफी ने बताया है कि "व्यक्ति के लिए समस्या तभी बनती है जबकि उसके प्रयोग से व्यक्ति के स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न हो जाये उसकी मानसिक शान्ति, उसके घर का आनन्दमय जीवन, उसका व्यापार और समाज में उसकी प्रतिष्ठा समाप्त हो जाय। उसकी दैनिक दिनचर्या में नशा करना सम्मिलित हो जाय हो"I 2.

इकॉनोमिक रिसर्च एजेंसी ICRIER और लॉ कंसल्टिंग फर्म PLR chambers की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में करीब 16 करोड़ लोग शराब का सेवन करते हैं, इनमें 95 फीसदी पुरुष हैं, जिनकी आयु 18 से 49 वर्ष के बीच है। देश में हर साल अरबों लीटर शराब की खपत होती है। सबसे ज्यादा शराब की खपत वाले राज्यों में पहले स्थान पर छत्तीसगढ़ आता है यहाँ करीब 3 करोड़ जनसंख्या वाले राज्य छत्तीसगढ़ में करीब 35.6 प्रतिशत लोग शराब का सेवन करते हैं। त्रिपुरा दूसरे स्थान है, त्रिपुरा में 34.7 प्रतिशत लोग शराब का सेवन करते हैं, इनमें 13.7 प्रतिशत लोग नियमित रूप से शराब का सेवन करते है। तीसरे नंबर पर शामिल आंध्र प्रदेश में करीब 34.5 प्रतिशत लोग शराब का नियमित सेवन करते है, चौथा नंबर पर पंजाब आता है यहाँ करीब 3 करोड़ की आबादी वाले पंजाब में 28.5 फीसदी लोग शराब का सेवन करते हैं, इनमें नियमित शराब पीने वालों का आंकड़ा 6 प्रतिशत है। पाँचवे नंबर पर अरुणाचल प्रदेश की 28 प्रतिशत आबादी शराब का सेवन करती है।

नशीली वस्तुओं का सेवन समय कोई ध्यान नहीं रखता। समाज का नशीला वातावरण समाज की शक्ति, वीरता और मान-मर्यादा के लिए हानिकारक तो है ही इसके साथ ही साथ समाज का आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक वातावरण भी कलुषित हो जाता है I

- **उद्देश्य: –**

1. व्यक्तियों में दिनोंदिन नशे की प्रवृति के बढ़ने के- कारण क्या हैं।
2. नशे के विभिन्न प्रकारों का पता लगाना I

3. व्यक्तियों में बढ़ते हुये नशे की प्रवृत्ति को समाप्त करने हेतु संभावित उपायों की खोज करना।
4. नशे को रोकथाम हेतु कठोर नीति बनाने हेतु शासन को उपयुक्त एवं ठोस सुझाव ठोस सुझाव देना।
5. नशा का अपराध से संबंध ज्ञात करना।

➢ **शोध पद्धति:-**

समाज वैज्ञानिकों के अध्ययन की केन्द्रीय परिधि समाज ही है। समाज की घटनाओं का वैज्ञानिक ढंग से सूक्ष्म अध्ययन कर यथार्थ तथ्यों तक पहुंचना उसका कर्त्तव्य होता है। इमाइल दुर्खीम "समाज की प्रघटनाओं को सामाजिक तथ्य मानते हैं और सामाजिक तक्ष्यों को ही समाजशास्त्र की विषय वस्तु के रूप में विवेचना करते हैं।"3.

प्रस्तुत अध्ययन "सामाजिक चुनौती: नशे की लत से बिखरता समाज" अध्ययन क्षेत्र के रूप में बालको नगर का चयन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की विशालता एवं इकाईयों की अधिकता एवं समय की कमी को देखते हुए 120 उत्तरदाताओं का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के समुचित संकलन एवं वैज्ञानिक अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है तथा अध्ययन क्षेत्र से संबंधित तथ्यों की प्राप्ति अवलोकन पद्धति के माध्यम से की गई है।

➢ **नशामुक्ति के महत्व:-**

1. नशीले पदार्थों के सेवन से पीड़ित व्यक्ति को पारिवारिक एवं सामाजिक अलगाव और लोगों की उपेक्षा लोगों की उपेक्षा का सामना करना का सामना करना पड़ता है, इस बात का अहसास करनाहै।
2. नशे के आदि लोगों को नशे की बुरी आदत से छुटकारा दिलाना है।
3. हमें नशे को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा स्वयं तथा दूसरों को जागरूक करना होगा।
4. नशा अपराध को जन्म देती है, अपराध को समाप्त करने के लिये नशामुक्त समाज का निर्माण आवश्यक है।
5. नशा करने से व्यक्ति के मस्तिष्क पर प्रभाव के अलावा, लीवर, पाचन संबंधी समस्याओं, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो जाती है तथा मौत भी हो जाती है।

➢ **नशे की प्रवृत्ति -**

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं से नशा करने के संबंध में प्रश्न पूछे गये, जिसका विवरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक-1

नशे की प्रवृत्ति

	नशा की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	79	65.8
2.	नहीं	41	34.2
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि 65.8 प्रतिशत उत्तरदाता नशा करते हैं, क्योंकि इनका मानना है कि कुछ समय के लिए सुकुन महसूस करते हैं, जबकि 25.8 प्रतिशत नशा नहीं करते इनका मानना है कि नशा करना गलत है।

- **नशे के प्रकार** -प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदातओं से नशा के प्रकार के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गयेजिसका विवरण , निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक -1.1

क्र .	प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1	शराब	15	18.9
2	गंजा	09	11.4
3	अफीम	06	7.6
4	तम्बाकू	10	12.6
5	गुड़ाकू	18	22.8
6	गुटखा	13	16.5
7	रासी	08	10.2

	कुल योग	79	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 22.8 प्रतिशत उत्तरदाता नशा के रूप में गुड़ाकू का प्रयोग करते है, क्योंकि यह सस्ता व आसानी से प्राप्त हो जाता है। 18.9 प्रतिशत उत्तरदाता शराब का प्रयोग करते हैं, 16.5 प्रतिशत उत्तरदाता गुटका का, 12.6 प्रतिशत उत्तरदाता तम्बाकू का, 11.4 प्रतिशत उत्तरदाता गांजा का, 10.2 प्रतिशत उत्तरदाता राशि का, 7.6 प्रतिशत उत्तरदाता अफीम का नशे के रूप में प्रयोग करते हैं, क्योकि यह बहुत महँगी व कठिनाई से प्राप्त होता है।

- **नशे का संबंध अपराध से -**

नशे की प्रवृत्ति मनुष्य की मानसिक क्षमता को विकृत कर देती है, इस कारण मनुष्य आपराधिक गतिविधियों की तरफ उन्मुख हो जाता है, क्योंकि फिर व्यक्ति के लिए नशा ही सर्वोपरि आवश्यक बन जाता है, जिसके लिए वह अपराध भी करता है। नशा शरीर को खोखला कर रहा है, व साथ ही अपराध का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है। नशा व्यक्ति के क्रोध के स्तर और चिड़चिड़ापन को बढ़ाता है नशे में होने के कारण आवेग नियंत्रण को भी कम कर देता है जिससे यह अधिक संभावना होती है की नशे में धुत व्यक्ति बड़े से बड़ा अपराध कर डालता है जो सामान्य स्थिति अर्थात होश में वह कभी नहीं करता। अध्ययनों से पता चलता है कि लगभग 50% अपराध नशे में होने के कारण ही होते है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं से नशा का संबंध अपराध से होता है, इस संबंध में प्रश्न पूछा गया तो सभी 120 उत्तरदाता यह मानते है कि नशे में होने के कारण ही अपराध होता है।

- **अपराध को नशा से दूर न रख पाने के कारण -**

तालिका-2

क्र.	कारण	आवृति	प्रतिशत
1.	वातावरण का प्रभाव	30	25
2.	पुरुष प्रधान सोच होना	18	15
3.	गलत दोस्तों का संगत	09	7.6

4.	नैतिकता की कमी	15	12.6
5.	कानून का भय न होना	41	34
6.	अपराधी स्वाभाव का बन जाना	07	5.8
	कुल योग	120	100

तालिका से स्पष्ट है कि 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं को कानून का भय न होना, 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मनना है कि वातावरण का प्रभाव पड़ता है, 15 प्रतिशत उत्तरदाता का पुरुष प्रधान सोच होना, 12.6 प्रतिशत नैतिकता की कमी, 7.6 प्रतिशत का गलत दोस्तों का संगत, 5.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि अपराधी स्वभाव का बन जाना है। अत: सबसे अधिक 41 उत्तरदाताओं का मानना है कि लोगों में कानून का भय न होना है, क्योंकि कानून के नियमों का कठोरता पूर्वक पालन नहीं किया जाता है।

- **नशे के दुष्परिणाम –**

नशा एक ऐसी बुराई है जो हमारे अस्तित्व को नष्ट कर देती है। नशे की लत से पीड़ित व्यक्ति परिवार के साथ समाज पर बोझ बन जाता है। युवा पीढ़ी सबसे अधिक नशे की लत से पीड़ित है। सरकार इन पीड़ितो को नशे के चुंगल से छुड़ाने के लिए नशा मुक्ति अभियान चला रही है। नशा करने से व्यक्ति के स्वास्थ्य के साथ सामाजिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टि से ठीक नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं से पुछा गया की नशा करने का दुष्परिणाम क्या आपको पता है तो सभी उत्तरदाताओं ने बताया की उन्हें नशा का दुष्परिणाम पता है जैसे - स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव व विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ का हो जाना, पारिवारिक विघटन, आर्थिक समस्या, सामाजिक स्तर पर पतन होना, कभी - कभी व्यक्तियों का मृत्यु हो जाना, पागल हो जाना आदि समस्या होती है यह जानते हुए भी लोग नशा करते हैं।

- **नशा रोकने हेतु सुझाव –**

नशा के दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए समाज सुधारक शताब्दियों से इसके निषेध का प्रयत्न करते आ रहे हैं तथा इसके लिए अनेक प्रकार के धार्मिक एवं राजकीय निषेध लगाए जाते रहे हैं। "नशानिषेध का सर्वप्रथम प्रयास गाँधी के द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम के समय ही 1920 से किया गया था तथा 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने नशाबन्दी के लिए प्रस्ताव पारित किया, 1930 में असहयोग आन्दोलन में नशानिषेध भी कार्यक्रम का एक हिस्सा था"।4. तब से लेकर आज तक चल ही रहा है लेकिन आज भी नियंत्रण नही हो पाया है। नशे की रोकथाम के लिये निम्न सुझाव -

1. नशे की बिक्री पर पूर्णतः प्रतिबंध हो भले ही इससे देश की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो।
2. नशे से पीड़ित व्यक्ति को हेय दृष्टि से न देखा जाये उसे नशामुक्ति केन्द्र व परामर्श केन्द्र से जोड़ा जाये।
3. नशे के तस्करों के खिलाफ कठोर नियम बनाये जाये, उन्हें मृत्युदण्ड की सजा भी दिया जाये ।
4. नशे की समस्या, विषय पर शोध अनुसंधान सम्बन्धी संगोष्ठी का आयोजन किया जाये।
5. नशे के खिलाफ गांव, शहरों में नशे के दुष्परिणामों का प्रचार- प्रसार टेलीफिल्म, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के माध्यम से जनजागरूक बनाया जाये जन तक पहुंचाकर लोगो को-।

➢ **निष्कर्ष -**

नशे के सेवन की समस्या वैश्विक स्तर पर भयानक रूप से फैल चुकी है। यह एक कटु सत्य है कि नशीले पदार्थों के सेवन से पीड़ित व्यक्ति को पारिवारिक एवं सामाजिक अलगाव और लोगों की उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। इससे निश्चित रूप से उन्हें मानसिक और शारीरिक कष्ट एवं आघात पहुचता हैं। वे आवश्यक मदद से भी वंचित रह जाते हैं । इससे उनका और उनके परिवार का जीवन दयनीय और कठिन बन जाता है। इसलिए नशा के लत से छुटकारा दिलाने की नीतियों में एक जन - केंद्रित सोच की आवश्यकता है जो मानव अधिकारों और करुणा पर लक्षित हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1-चौबे राजेन्द्र कुमार, "छात्रो में नशे की प्रवृति", अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दरियागंज दिल्ली, पृ.-190, सन -2005.

2-मदन जी. आर., "भारतीय सामाजिक समस्याएं" विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली पृ.-144, सन -1984.

3-Emile Durkheim, The Rules of Sociological Methods, P. -1

4-महाजन संजीव, "भारत में सामाजिक विघटन" अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दरियागंज दिल्ली, पृ.-106, सन 2007.

5-समाचार पत्र "देशबन्धु, नवभारत, नई दुनिया, हरिभूमि आदि।